Toppersnotes

Unleash the topper in you

UPPSC

Prelims

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPSC)

भाग – 9

उत्तर प्रदेश का सामान्य ज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	उत्तर प्रदेश संक्षिप्त परिचय	1
2	उत्तर प्रदेश का प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास	5
3	उत्तर प्रदेश का आधुनिक इतिहास	18
4	उत्तर प्रदेश का भौतिक भूगोल	28
5	जलवायु और मृदा	32
6	अपवाह तंत्र	35
7	उत्तर प्रदेश के संरक्षित क्षेत्र	44
8	प्राकृतिक वनस्पतियाँ	49
9	उत्तर प्रदेश जनगणना 2011	53
10	कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र	60
11	उद्योग	71
12	खनिज और ऊर्जा	84
13	परिवहन और संचार	93
14	उत्तर प्रदेश की प्रशासनिक व्यवस्था	102
15	राज्य विधानमंडल	106
16	राजनीतिक व्यवस्था	112
17	न्यायपालिका	121
18	स्थानीय स्वशासन	127
19	संवैधानिक एवं गैर–संवैधानिक निकाय	134
20	उत्तर प्रदेश की जनजातियाँ	141
21	उत्तर प्रदेश में पर्यटन	146
22	उत्तर प्रदेश की शिक्षा एवं स्वास्थ्य व्यवस्था	159
23	उत्तर प्रदेश की कला एवं संस्कृति	168

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	कल्याणकारी योजनाएँ	192
25	महत्वपूर्ण व्यक्तित्व	205
26	संस्थान, संगठन, स्थान, उद्यान एवं नगर	214
27	भारत में आर्थिक नियोजन	221
28	उत्तरप्रदेश बजट 2026–27	227
29	उत्तरप्रदेश का आर्थिक सर्वेक्षण 2025–26	233

1 अध्याय

उत्तर प्रदेश : संक्षिप्त परिचय

परिचय

उत्तर प्रदेश राजस्थान, मध्य प्रदेश तथा महाराष्ट्र के बाद क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का चौथा सबसे बड़ा राज्य है। इसका कुल क्षेत्रफल 2,40,928 वर्ग किलोमीटर है, जो भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल (32,87,263 वर्ग किलोमीटर) का लगभग 7.33% है।

मापदंड	विवरण
राजधानी	लखनऊ
गठन	1 नवंबर, 1956
क्षेत्रफल	2,40,928 वर्ग किमी
जनपद (ज़िले)	75
आर्थिक संभाग	4
मंडल	18
जनसंख्या	199,812,341

पूर्व में राज्य का नाम

वर्ष	नाम
1836	उत्तर-पश्चिमी प्रांत
1877	उत्तर पश्चिमी प्रांत, आगरा और अवध
1902	आगरा और अवध का संयुक्त प्रांत
1 अप्रैल, 1937	संयुक्त प्रांत
24 जनवरी, 1950	उत्तर प्रदेश

नोट:

- उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 24 जनवरी, 2018 से राज्य के स्थापना दिवस को आधिकारिक रूप से 'उत्तर प्रदेश दिवस' के रूप में मनाने की परंपरा प्रारम्भ की गई।

राज्य की राजधानी:

वर्ष	उत्तर प्रदेश की राजधानी
1858 तक	आगरा
1858 – 1921	इलाहाबाद (प्रयागराज)
1921 से	लखनऊ (प्राचीन नाम: लखनपुरी)
1935 से	लखनऊ (राजधानी पूर्णतः लखनऊ शिफ्ट हो गई)

- **राज्य का विभाजन** – 9 नवम्बर, 2000 को उत्तर प्रदेश के 13 जिलों को पृथक कर उत्तरांचल (वर्तमान उत्तराखण्ड) राज्य का गठन किया गया।
- **राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) के अंतर्गत आने वाले उत्तर प्रदेश के जिले** – 8 (मेरठ, गाजियाबाद, गौतमबुद्ध नगर, बुलंदशहर, हापुड़, बागपत, मुजफ्फरनगर, शामली)
- उत्तर प्रदेश के राज्य राजधानी क्षेत्र (एससीआर) के अंतर्गत 6 जिले (लखनऊ, हरदोई, सीतापुर, उन्नाव, रायबरेली और बाराबंकी) आते हैं, जिनका कुल क्षेत्रफल 27,826 वर्ग किलोमीटर है।
  - ✓ **उत्तर प्रदेश राज्य राजधानी क्षेत्र विकास प्राधिकरण (UP-SCRDA)** इस क्षेत्र का प्रबंधन करता है।
- **उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री, जो भारत के प्रधानमंत्री बने** – चौधरी चरण सिंह और विश्वनाथ प्रताप सिंह
- **उत्तर प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष, जो मुख्यमंत्री भी बने** – श्री बनारसी दास और श्री श्रीपति मिश्र
- **राज्य में लगा पहला राष्ट्रपति शासन** – 25 फरवरी, 1968 से 26 फरवरी, 1969 तक।
- **राज्य का विधानमंडल** – द्विसदनीय
- **लोकसभा सीटें** – 80
- **राज्यसभा सीटें** – 31
- **विधान सभा के सर्वाधिक बार अध्यक्ष बनने वाले व्यक्ति** – श्री आत्माराम गोविंद खेर और केशरी नाथ त्रिपाठी (3 बार)
- **विधान सभा के कुल सदस्य** – 404 (403 निर्वाचित, 1 मनोनीत)
- **विधान परिषद के कुल सदस्य** – 100
- **पहली बार राज्य विधानसभा का गठन** – जुलाई, 1937
- **सबसे अधिक विधानसभा सीटों वाला ज़िला** – प्रयागराज (12 सीटें)
- **सबसे कम विधानसभा सीटों वाले ज़िले** – श्रावस्ती, महोबा और चित्रकूट (प्रत्येक में 2)
- **राज्य का पहला केंद्रीय कारावास (जेल)** – बरेली
- **राज्य में राष्ट्रपति शासन** – 10 बार
- **प्रथम मुख्यमंत्री** – पंडित गोविंद बल्लभ पंत
- **प्रथम उपमुख्यमंत्री** – चौधरी नारायण सिंह
- **राज्य और भारत की पहली महिला मुख्यमंत्री** – सुचेता कृपलानी
- **राज्य और भारत की पहली महिला राज्यपाल** – सरोजिनी नायडू
- **वर्तमान राज्यपाल** – आनंदीबेन पटेल
- **भारत का प्रथम रात्रिकालीन वन्यजीव पार्क** – ग्रेटर नोएडा
- **स्वतंत्रता के बाद प्रथम अध्यक्ष** – राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन
- **स्वतंत्रता के बाद विधान परिषद के प्रथम सभापति** – श्री चंद्रभाल
- **इलाहाबाद उच्च न्यायालय के प्रथम मुख्य न्यायाधीश** – न्यायमूर्ति वाल्टर मॉर्गन

भौगोलिक स्थिति

- **उत्तर प्रदेश का क्षेत्रफल** – 2,40,928 वर्ग किलोमीटर (भारत के क्षेत्रफल का लगभग 7.33%)
- **अक्षांश** – 23°52′ उत्तरी अक्षांश से 31°28′ उत्तरी अक्षांश तक
- **देशांतर** – 77°31′ पूर्वी देशांतर से 84°39′ पूर्वी देशांतर तक
- **पूर्व से पश्चिम तक राज्य की लंबाई** – 650 किमी
- **उत्तर से दक्षिण तक राज्य की लंबाई** – 240 किमी
- **सबसे पूर्वी जिला** – बलिया

- **सबसे पश्चिमी ज़िला** – शामली
- **सबसे उत्तरी जिला** – सहारनपुर
- **सबसे दक्षिणी जिला** – सोनभद्र
- **क्षेत्रफल की दृष्टि से, सबसे बड़ा जिला** – लखीमपुर खीरी (7,680 वर्ग किमी.)
- **क्षेत्रफल की दृष्टि से, सबसे छोटा जिला** – हापुड़ (660 वर्ग किमी.)
- **सहारनपुर से सीमा साझा करने वाले राज्यों की संख्या** – 3 (हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड)
- **कृषि जलवायु क्षेत्र** – 9
- **प्रमुख नदियाँ** – गंगा, यमुना, रामगंगा, गोमती और घाघरा
- **सबसे बड़ी नहर प्रणाली** – शारदा नहर

उत्तर प्रदेश की सीमाएँ

- **सीमावर्ती राज्यों/केंद्र-शासित प्रदेशों की संख्या** – 9 (8 राज्य और 1 केंद्र-शासित प्रदेश)
- **सीमावर्ती देश का नाम** – नेपाल
- **सोनभद्र से सीमा-साझा करने वाले राज्यों की संख्या** – 4 (मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड और बिहार)
- **उत्तर प्रदेश के साथ सर्वाधिक सीमा साझा करने वाला राज्य** – मध्य प्रदेश
- **उत्तर प्रदेश के साथ न्यूनतम सीमा साझा करने वाला राज्य** – हिमाचल प्रदेश
- **तीन तरफ़ से मध्य प्रदेश से घिरा हुआ उत्तर प्रदेश का ज़िला**– ललितपुर

नोट:

- **बुंदेलखंड** नामक क्षेत्र **उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की सीमा** पर स्थित है।
- उत्तर प्रदेश के **ललितपुर** ज़िले की सीमा राज्य के केवल एक अन्य जिले के साथ लगती है।

क्रम संख्या	राज्य/देश	उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती जिले
1	मध्य प्रदेश	**11 ज़िले** (आगरा, इटावा, जालौन, झांसी, ललितपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट, प्रयागराज, मिर्जापुर, सोनभद्र)
2	बिहार	**7 ज़िले** (सोनभद्र , चंदौली, गाजीपुर, बलिया, देवरिया, कुशीनगर, महाराजगंज)
3	उत्तराखंड	**7 ज़िले** (सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, बिजनौर, मुरादाबाद, रामपुर, बरेली, पीलीभीत)
4	हरियाणा	**6 ज़िले** (सहारनपुर, शामली, बागपत, गौतम बुद्ध नगर, अलीगढ़, मथुरा)
5	दिल्ली	**3 ज़िले** (बागपत, गाजियाबाद, गौतमबुद्ध नगर)
6	राजस्थान	**2 ज़िले** (आगरा, मथुरा)
7	छत्तीसगढ	**1 जिला** (सोनभद्र)
8	झारखंड	**1 जिला** (सोनभद्र)
9	हिमाचल प्रदेश	**1 जिला** (सहारनपुर)
10	नेपाल	**7 जिले** (महाराजगंज, सिद्धार्थनगर, बलरामपुर, श्रावस्ती, बहराइच, लखीमपुर खीरी, पीलीभीत)

<u>राजकीय प्रतीक</u>

राजकीय प्रतीक: वृत्त के अंदर दो मछलियाँ तथा धनुष-बाण		**राजकीय पक्षी:** सारस क्रेन	
राजकीय पशु: बारहसिंगा		**राजकीय वृक्ष:** अशोक	
राजकीय पुष्प: पलाश		**राजकीय खेल:** हॉकी	

2 अध्याय

उत्तर प्रदेश का प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास

प्राचीन इतिहास

- उत्तर प्रदेश का हज़ारों वर्षों का समृद्ध इतिहास रहा है। यह आर्य संस्कृति का प्रमुख केंद्र होने के साथ-साथ कुरु, पांचाल, वत्स एवं काशी जैसे प्राचीन महाजनपदों का भी प्रमुख क्षेत्र रहा है।
- यह क्षेत्र प्राचीन काल में सम्राट अशोक एवं हर्षवर्धन तथा मध्ययुगीन काल में बादशाह अकबर जैसे महान शासकों के शासनकाल में अत्यधिक समृद्ध हुआ।
- इस क्षेत्र ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

पुरापाषाण काल (लगभग 20 लाख ईसा पूर्व से 10,000 ईसा पूर्व)

- उत्तर प्रदेश के मेरठ और सहारनपुर जनपद में ताम्रपाषाण काल के साक्ष्य मिले हैं।
- **प्रमुख स्थल:** प्रयागराज (इलाहाबाद) में बेलन घाटी
- **उत्खनन:** इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रो. जी. आर. शर्मा द्वारा किया गया।
- **प्राप्त हुई प्रमुख सामग्री:** बेलन घाटी के लोहदनाला पुरातात्त्विक स्थल से पत्थर के औज़ार और अस्थि (हड्डी) से निर्मित देवी की प्रतिमा मिली है।
- **अन्य प्रमुख स्थल**
  - ✓ सोनभद्र में सिंगरौली घाटी
  - ✓ चंदौली में चकिया

मध्यपाषाण काल (10,000 ईसा पूर्व से 8000 ईसा पूर्व)

- प्रतापगढ़ के सराय नाहर राय और महदहा से मानव अस्थियों के अवशेष मिले हैं।
- **प्राप्त हुई प्रमुख सामग्री:** उत्तर प्रदेश के संत कबीर नगर जिले के **लहुरादेवा** से भारतीय उपमहाद्वीप में कृषि के सबसे प्राचीन साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। यहाँ लगभग **8000 ईसा पूर्व से 9000 ईसा पूर्व** के धान (चावल) के अवशेष मिले हैं।

नवपाषाण काल (8000 ईसा पूर्व से 4000 ईसा पूर्व)

- सराय नाहर राय (प्रतापगढ़), मिर्ज़ापुर, सोनभद्र और बुंदेलखंड में हुई खुदाई (उत्खनन) में इस काल के औज़ार और हथियार मिले हैं।
- प्रतापगढ़ ज़िले के सराय नाहर राय गाँव के पास दफ़नाए गए मानव कंकाल के अवशेष मिले हैं।
- मानव पुरामानव विज्ञान की दृष्टि से, खोपड़ी की दो जानकारियों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इसमें पहली, जाइगोमैटिक आर्च (गाल की अस्थि चाप) पहले दाढ़-पूर्व दांत के अग्र भाग से मिलता है, और दूसरी, सामान्यतः बड़े दांतों पर इनेमल की मोटी परत होती है।

हड़प्पा सभ्यता

- हड़प्पा सभ्यता (जिसे सिंधु घाटी सभ्यता भी कहा जाता है) कांस्य युग की एक प्रमुख सभ्यता थी, जो लगभग 3300 ईसा पूर्व से 1300 ईसा पूर्व तक फली-फूली थी।
- वर्तमान पाकिस्तान तथा भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग में विस्तृत यह सभ्यता सुनियोजित नगर नियोजन, उन्नत वास्तुकला तथा व्यापक अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक नेटवर्क के लिए प्रसिद्ध है। उत्तर प्रदेश में स्थित प्रमुख हड़प्पाकालीन स्थलों का विवरण निम्नलिखित है-

मंडी

- यह यमुना नदी के पूर्व में मुजफ्फरनगर जिले में स्थित है।
- यह मुख्य हड़प्पा सभ्यता के विस्तार क्षेत्र का एक सीमांत या बाह्य स्थान है।
- **यहाँ से प्राप्त प्रमुख सामग्री:**
  - ✓ यहाँ से हड़प्पाकालीन आभूषणों के समृद्ध भंडार मिले है।
  - ✓ साथ ही, ताँबे के दो पात्र के अतिरिक्त सोने, अकीक, गोमेद और ताँबे से निर्मित अनेक मनके मिले है।
  - ✓ सोने के मनकों के प्रकारों में अंतरक (स्पेसर) मनके, खोखले सिरों वाले मनके, एकल एवं द्वि-घंटीकार मनके तथा पतले वृत्ताकार मनके शामिल थे।

आलमगीरपुर

- यह मेरठ जिले में यमुना नदी के किनारे स्थित है।
- यह हड़प्पा सभ्यता का सुदूर पूर्वी पुरास्थल है।
- इसे **परशुराम खेड़ा** के नाम से भी जाना जाता है।
- **यहाँ से प्राप्त प्रमुख सामग्री:**
  - ✓ यहाँ से विशिष्ट हड़प्पाकालीन मृद्भांड, संभावित मृद्भांड निर्माण कार्यशाला, छत की टाइलें, घड़े, प्याले, कलश, पासे, मनके, टेराकोटा की वस्तुएँ, खिलौने वाली गाड़ियाँ तथा कूबड़ वाले बैल एवं साँप की मृण्मूर्तियाँ मिले हैं।
  - ✓ साथ ही, स्टीटाइट पेस्ट, फ़ायेंस, काँच, कार्नेलियन, क्वार्ट्ज़, एगेट और काले जैस्पर से बने मनके और कर्णफूल पाए गए है।
  - ✓ यहाँ धातु का उपयोग सीमित मात्रा में हुआ था। यहाँ से ताँबे की ब्लेड मिली है।
  - ✓ यहाँ से वस्त्र निर्माण तथा कपास की खेती के साक्ष्य भी प्राप्त हुए हैं।

हुलास

- यह उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में यमुना नदी की सहायक नदियों (हिंडन, कृष्णा, कठना और मस्करा या मसखरा) के ऊँचे किनारों पर स्थित है।
- यह हड़प्पा सभ्यता का उत्तरकालीन पुरातात्त्विक स्थल है।
- **यहाँ से प्राप्त प्रमुख सामग्री:**
  - ✓ यहाँ से पाँच वृत्ताकार भट्टियाँ, ज्यामितीय एवं प्राकृतिक आकृतियों से अलंकृत चित्रित मृद्भांड, चर्ट के फलक, अस्थियों से निर्मित नोकें और टेराकोटा की उत्कीर्ण मुहरें मिली हैं।
  - ✓ यहाँ से चना, लोबिया, अखरोट, जई, मसूर, मटर, चना, रागी के साथ-साथ जंगली एवं कृषित (Cultivated) धान के साक्ष्य मिले हैं।
  - ✓ यहाँ से अश्वत्थ (पीपल) के फल भी मिले हैं।

सिनौली

- यह बागपत जिले में गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र में स्थित है।
- वर्ष 2018 के उत्खनन में प्राप्त सामग्री लगभग 2000 ईसा पूर्व से 1800 ईसा पूर्व की हैं। यहाँ से प्राप्त सामग्री को गैरिक वर्ण मृद्भांड संस्कृति और ताम्र-निधि संस्कृति से संबंधित माना गया है, जो उत्तर हड़प्पा काल के समकालीन थी।
- यहाँ से प्राप्त प्रमुख सामग्रियों में लकड़ी के ताबूत, ताँबे की तलवारें, शिरस्त्राण तथा ताँबे की चादरों से मढ़े ठोस चक्रों वाले लकड़ी के रथ शामिल हैं।

बड़ागाँव या बड़गाँव

- यह उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में स्थित है।
- यह उत्तर हड़प्पा काल की एक ग्रामीण बस्ती का प्रतिनिधित्व करता है, जो ऊपरी यमुना घाटी की दिशा में हड़प्पा संस्कृति के पूर्ववर्ती विस्तार का प्रमाण है।
- पुरातत्वविदों को उत्तर-हड़प्पा सभ्यता और गेरूए या गैरिक रंग के मृदभांड (OCP) सभ्यता के बीच की बहुत समानताओं के साक्ष्य मिले हैं।

वैदिक युग (1500 ईसा पूर्व - 500 ईसा पूर्व)

- वैदिक काल (1500 ईसा पूर्व–600 ईसा पूर्व) सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के पश्चात् प्राचीन भारतीय इतिहास का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण काल था।इस काल को ऐतिहासिक रूप से दो प्रमुख चरणों में वर्गीकृत किया जाता है-

प्रारंभिक वैदिक काल

- प्रारंभ में, भारत में आर्य मुख्य रूप से सप्त-सिंधु (सात नदियों की भूमि) के सिंचित क्षेत्र में निवास करते थे, जिसमें वर्तमान पंजाब, हरियाणा और पूर्वी अफ़गानिस्तान के क्षेत्र शामिल थे। सप्त-सिंधु की सात नदियाँ निम्नलिखित थी -

पुराना नाम	नया नाम / आधुनिक नाम / विवरण
सिंधु	सिंधु
वितस्ता	झेलम
अस्किनी	चिनाब
परुष्णी	रावी
विपाशा	ब्यास
शतुद्री	सतलुज
सरस्वती	लुप्त नदी (राजस्थान के मरुस्थल क्षेत्र में विलुप्त मानी जाती है)

- **आर्यों के पाँच महत्वपूर्ण कुल/वंश (पंचजन):** पुरु, तुर्वश, यदु, अनु और द्रुह्यु।
- समय के साथ आर्यों ने अपने निवास क्षेत्र को पूर्व दिशा में विस्तारित किया।
  - ✓ शतपथ ब्राह्मण में कोसल (अवध) और विदेह (उत्तरी बिहार) पर ब्राह्मणों और क्षत्रियों की विजय का वर्णन है।
- उनके प्रशासन का नेतृत्व एक राजन (मुखिया) द्वारा किया जाता था, जिसका प्राथमिक कार्य क्षेत्र को नियंत्रित करने के बजाय मवेशियों और कबीले की रक्षा करना था।
- यह समाज अर्ध-खानाबदोश और पशुपालक था; इसमें महिलाएं शिक्षित थी और कबीले की सभाओं में सक्रिय रूप से भाग लेती थी।
- इस काल में केवल ऋग्वेद की रचना हुई, जो वैदिक ऋचाओं (पवित्र स्तुतियों) का संकलन है। इसका संरक्षण एवं प्रसार पूर्णतः मौखिक परंपरा के माध्यम से हुआ।

उत्तर वैदिक काल

- उत्तर वैदिक काल में सप्त-सिंधु क्षेत्र का महत्त्व कम होने लगा तथा ब्रह्मर्षि देश (मध्यदेश) प्रमुख सांस्कृतिक एवं धार्मिक केंद्र के रूप में उभरे।
  - ✓ उस काल में, वर्तमान उत्तर प्रदेश का क्षेत्र भारत के एक पवित्र क्षेत्र और वैदिक संस्कृति व विद्या के एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभरा।

- इस काल में समाज की समतामूलक व्यवस्था का स्थान सख्त एवं जटिल वर्ण-व्यवस्था (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र) ने ले लिया। इस काल में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में गिरावट आई तथा संयुक्त परिवार व्यवस्था प्रचलित हुई।
- समाज का स्वरूप पशुपालन-प्रधान जीवन से स्थायी कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था में परिवर्तित हो गया। साथ ही, भूमि की जुताई एवं कृषि कार्यों के लिए लोहे के औजारों का व्यापक रूप से उपयोग किया जाने लगा।
- ब्राह्मणों को उनकी विद्वत्ता एवं धार्मिक आचरण (पवित्रता) के कारण समाज में अत्यधिक सम्मान प्राप्त था।
- वैदिक ग्रंथों में वैदिक संस्कृति के प्रमुख केंद्रों के रूप में कुरु-पांचाल, काशी और कोसल के नए राज्यों का उल्लेख है।
- अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर, विदेह के राजा के द्वारा कुरु-पांचाल के विद्वानों को विशेष उपहार दिए जाते थे।
- पांचाल के राजा प्रवाहन जयवल्ली स्वयं एक महान विचारक थे, जिनकी प्रशंसा शिलाका, दल्भ्य, श्वेतकेतु और उनके पिता उद्दालक अरुणि जैसे ब्राह्मण विद्वानों ने की है।

वैदिक साहित्य

- इस काल में वैदिक परंपरा का क्रमिक विकास उपनिषदों तक हुआ, जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न विषयों पर समृद्ध साहित्य की रचना हुई।
  - ✓ इस काल के अन्य ग्रंथ: सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद के अतिरिक्त दार्शनिक उपनिषद।
- उपनिषद साहित्य ऋषियों के आश्रमों में किए गए चिंतन-मनन का परिणाम था; इनमें से कई आश्रम उत्तर प्रदेश क्षेत्र में स्थित थे।
- यहाँ भारद्वाज, याज्ञवल्क्य, वशिष्ठ, विश्वामित्र, वाल्मीकि और अत्रि जैसे प्रसिद्ध ऋषियों के आश्रम थे या वे इस क्षेत्र से जुड़े हुए थे।
- इस क्षेत्र में स्थित आश्रमों में ही कुछ आरण्यकों और उपनिषदों की रचना की गई थी।

महाजनपद (छठी शताब्दी ईसा पूर्व)

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व में 16 महाजनपदों के उदय ने प्राचीन भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ प्रस्तुत किया।
- इनमें से आठ महाजनपद आंशिक या पूर्ण रूप से वर्तमान उत्तर प्रदेश की सीमाओं में स्थित थे।
- उत्तर प्रदेश से संबंधित इन आठ महाजनपदों का विवरण निम्नलिखित है-

1. काशी

- ✓ राजधानी: काशी
- ✓ वर्तमान स्थान: वर्तमान में वाराणसी
- ✓ काशी जनपद की स्थापना काशी जनजाति द्वारा वाराणसी के आसपास के क्षेत्र में की गई थी, जहाँ इसकी राजधानी भी स्थित थी।
- ✓ ऐसा माना जाता है कि वाराणसी का नाम वरुणा और अस्सी नदियों के नाम पर पड़ा है।
- ✓ अपनी समृद्धि एवं सामरिक महत्त्व के कारण काशी का कोशल, अंग एवं मगध जैसे अन्य शक्तिशाली महाजनपदों के साथ लंबे समय तक प्रभुत्व स्थापित करने के लिए संघर्ष चला।
- ✓ मत्स्य पुराण और अल-बिरूनी की रचनाओं में काशी के लिए 'कौशिक' और इसके अलग-अलग नाम का उल्लेख हैं, जबकि दूसरे स्रोतों में इसे केवल 'काशी' कहा गया है।

2. कोशल/कोसल

- ✓ राजधानी: श्रावस्ती और अयोध्या
- ✓ वर्तमान स्थान: अवध क्षेत्र (वर्तमान अयोध्या, गोंडा एवं बहराइच का क्षेत्र)
  - **दक्षिण में**, इसकी सीमा **गंगा नदी** तक थी।
  - **पूर्व** में, इसकी सीमा **गंडक नदी** तक थी।

- ✓ मगध के अजातशत्रु और प्रसेनजित के बीच सत्ता के लिए लगातार संघर्ष चल रहा था, जो अंततः मगध और लिच्छवी संघ के गठबंधन के साथ समाप्त हुआ।
- ✓ प्रसेनजित के पश्चात् विदूडभ कोशल का शासक बना और अंततः कोशल महाजनपद का मगध साम्राज्य में विलय हो गया।

3. चेदि (चेति)

- ✓ राजधानी: सुक्तिमती
- ✓ वर्तमान स्थान: बुंदेलखंड क्षेत्र
- ✓ मगध के जरासंध तथा कुरु के दुर्योधन के सहयोगी राजा शिशुपाल प्राचीन चेदि महाजनपद के प्रसिद्ध शासक थे।
- ✓ महाभारत के कुरुक्षेत्र युद्ध में चेदि वंश के प्रमुख योद्धाओं में दमघोष, शिशुपाल, धृष्टकेतु, सुकेतु, शरभा तथा भीम की पत्नी और अन्य का उल्लेख मिलता है।
- ✓ पांडवों ने अपने तेरहवें वर्ष के अज्ञातवास के लिए चेदि महाजनपद को चुना था।

4. शुरसेन

- ✓ राजधानी: मथुरा
- ✓ वर्तमान स्थान: ब्रजमंडल क्षेत्र
- ✓ शूरसेन के राजा अवन्तिपुत्र भगवान बुद्ध के प्रारम्भिक अनुयायियों में से एक थे। उनके प्रभाव से मथुरा बौद्ध धर्म का एक प्रमुख केंद्र बन गया।
- ✓ इस क्षेत्र में कई कबीले रहते थे और उनका नेतृत्व एक मुखिया करता था।

5. कुरु

- ✓ राजधानी: इंद्रप्रस्थ (दक्षिण-पूर्वी हरियाणा के साथ साझा क्षेत्र)
- ✓ वर्तमान स्थान: मेरठ क्षेत्र
- ✓ वे पुरु-भरत वंश से संबंधित थे।
- ✓ कुरु कुरुक्षेत्र में रहने वाले एक विशिष्ट वंश था।
- ✓ बौद्ध ग्रंथ सुमंगविलासिनी के अनुसार, कुरु मूलतः उत्तर कुरु के निवासी थे।
- ✓ वायु पुराण में इस बात का उल्लेख है कि कुरु जनपद के संस्थापक राजा कुरु थे, जो पुरु वंश के संवर्ग या संवर्षण के पुत्र थे।
- ✓ ऐसा माना जाता है कि 5वीं/6वीं शताब्दी ईसा पूर्व तक कौरवों की शासन-व्यवस्था राजतंत्र से गणतांत्रिक शासन-व्यवस्था में परिवर्तित हो गई थी।

6. पांचाल (पंचाल)

- ✓ स्थान: पश्चिमी उत्तर प्रदेश
- ✓ पांचाल को उत्तरी पांचाल और दक्षिणी पांचाल में विभाजित किया गया था।
- ✓ उत्तरी पांचाल की राजधानी अहिच्छत्र थी
- ✓ दक्षिणी पांचाल की राजधानी काम्पिल्य थी।
- ✓ इस महाजनपद में प्रसिद्ध नगर कान्यकुब्ज स्थित था।
- ✓ 6ठी-5वीं शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान, पांचाल महाजनपद की शासन-व्यवस्था भी राजतंत्र से गणतांत्रिक शासन-व्यवस्था में परिवर्तित हो गई।

7. **मल्ल**

- ✓ राजधानी: कुशीनारा (कुशीनगर) और पावा
- ✓ वर्तमान स्थान: कुशीनगर
- ✓ महाभारत जैसे महाकाव्यों में मल्लों का वर्णन अंग, वंग और कलिंग जनजातियों के साथ किया गया है।
- ✓ ऐतिहासिक दृष्टि से यह महाजनपद अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यहीं पर बुद्ध को महापरिनिर्वाण प्राप्त हुआ था।
- ✓ प्रारंभ में, यहाँ राजतंत्रात्मक शासन-व्यवस्था थी, जो बाद में गणतांत्रिक (संघात्मक) शासन-व्यवस्था में परिवर्तित हो गई।
- ✓ वे अत्यंत युद्धप्रिय और साहसी लोग थे, जिनका वर्णन मनुस्मृति में क्षत्रियों के रूप में किया गया है। इसके अतिरिक्त, उनका उल्लेख महापरिनिब्बान सुत्त में वज्जि/ वशिष्ठ के रूप में किया गया है।

8. **वत्स**

- ✓ **राजधानी:** कौशाम्बी (वर्तमान में, प्रयागराज के समीप)।
- ✓ **वर्तमान स्थान:** कौशाम्बी
- ✓ यहाँ राजतंत्रात्मक (राजशाही) शासन-व्यवस्था प्रचलित थी।
- ✓ यह क्षेत्र आर्थिक गतिविधियों का एक प्रमुख केंद्र था तथा इसके व्यापारिक एवं व्यावसायिक संबंध बेहद समृद्ध और मजबूत थे।
- ✓ **प्रमुख शासक:** उदयन
- ✓ प्रारंभ में, वत्स के शासक युद्धप्रिय एवं आक्रामक प्रवृत्ति के होने के कारण बौद्ध धर्म के प्रति विरोधी भावना रखते थे। हालाँकि, कालांतर में वे अधिक सहिष्णु हो गए और अंततः बुद्ध के अनुयायी बन गए।
- ✓ इसके पश्चात्, बौद्ध धर्म को वत्स महाजनपद का राजकीय धर्म घोषित कर दिया गया।

बौद्ध धर्म और जैन धर्म

उत्तर प्रदेश बौद्ध और जैन दोनों ही धर्मों का पालना रहा है। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में गौतम बुद्ध, महावीर, मक्खलि गोसाल और अन्य महान विचारकों ने उत्तर प्रदेश में एक महान वैचारिक क्रांति की शुरुआत की थी।

क्या आप जानते हैं?
आजीवक (आजीविक) संप्रदाय के संस्थापक मक्खलि गोसाल का जन्म श्रावस्ती के पास श्रावण में हुआ था।

उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म

- ➢ बौद्ध धर्म ने रूढ़िवादी वैदिक कर्मकांडों के विरुद्ध एक सुधारवादी आंदोलन के रूप में उत्तर प्रदेश में गहरी जड़ें जमाई।
- ➢ **वाराणसी** के पास **सारनाथ** वह पवित्र स्थल है, जहाँ **गौतम बुद्ध ने अपना पहला उपदेश** दिया था, जिसे **धर्मचक्र प्रवर्तन** के नाम से जाना जाता है।
- ➢ **कुशीनगर** वह पावन स्थल है, जहाँ लगभग 483 ईसा पूर्व में भगवान बुद्ध को **महापरिनिर्वाण** प्राप्त हुआ।
- ➢ **कोसल साम्राज्य** महाजनपद की प्राचीन राजधानी श्रावस्ती बौद्ध धर्म का एक प्रमुख केंद्र थी। भगवान बुद्ध ने यहाँ लगभग **24 वर्षावास** व्यतीत किए तथा यहीं प्रसिद्ध **जेतवन विहार** स्थित है।
- ➢ **संकिसा** को परंपरागत रूप से वह पवित्र स्थल माना जाता है, जहाँ भगवान बुद्ध अपनी **माता एवं देवताओं** को उपदेश देने के पश्चात् स्वर्ग से अवतरित हुए थे।

उत्तर प्रदेश में जैन धर्म

जैन धर्म में उत्तर प्रदेश के शहरों का बहुत बड़ा ऐतिहासिक और आध्यात्मिक महत्व है, क्योंकि यहाँ कई तीर्थंकरों का जन्म हुआ था।

- **अयोध्या** जैन धर्म में अत्यंत पवित्र स्थान रखती है, क्योंकि यह **प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ (आदिनाथ)** सहित **पाँच जैन तीर्थंकरों** की जन्मस्थली है।
- **वाराणसी (काशी) 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ** के साथ-साथ तीन अन्य तीर्थंकरों (**सुपार्श्वनाथ, चंद्रप्रभा और श्रेयांसनाथ**) की जन्मस्थली है।
- **कौशाम्बी एवं मथुरा** जैन धर्म में **जैन मठवासी परंपरा, व्यापार तथा शिक्षा** के प्रमुख ऐतिहासिक केंद्र थे।
- **देवगढ़ 8वीं से 17वीं शताब्दी** के मध्य निर्मित **31 प्राचीन जैन मंदिरों** के समूह के लिए प्रसिद्ध है।

क्या आप जानते हैं?

ऐसा माना जाता है कि भगवान महावीर ने वर्षा ऋतु में दो बार (प्रथम बार श्रावस्ती में तथा द्वितीय बार देवरिया के निकट स्थित पड़रौना में) इस क्षेत्र में वर्षावास किया था।

वैदिक काल के पश्चात् प्रमुख राजवंश एवं साम्राज्य

मगध क्षेत्र से कई राजवंशों का उद्भव हुआ, जिन्होंने बड़े क्षेत्रों को एकीकृत किया और भारत के राजनीतिक व सांस्कृतिक विकास को काफी प्रभावित किया। इस क्षेत्र पर मुख्य रूप से हर्यक, शिशुनाग और नंद राजवंशों का शासन रहा।

मगध पर केंद्रित साम्राज्य (छठी शताब्दी ईसा पूर्व – तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व)

हर्यंक एवं शिशुनाग वंश (लगभग 544 से 345 ईसा पूर्व):

- बिम्बिसार जैसे शासकों द्वारा स्थापित गंगा के मैदानी क्षेत्र के साम्राज्य का विस्तार मुख्यतः रणनीतिक-वैवाहिक संबंधों के माध्यम से किया गया।

नंद वंश (345 ईसा पूर्व से 321 ईसा पूर्व)

- नंद वंश की स्थापना महापद्म नंद ने की थी।
- नंद साम्राज्य का विस्तार पंजाब एवं बंगाल को छोड़कर लगभग संपूर्ण भारत में था।
- उनके शासन के दौरान, सिकंदर ने 326 ईसा पूर्व में भारत पर आक्रमण किया।
- चंद्रगुप्त मौर्य से पराजित होने तक नंद वंश अपनी विशाल सैन्य शक्ति और अपार धन के लिए प्रसिद्ध था।

मौर्य साम्राज्य (लगभग 321–185 ईसा पूर्व):

- वायु पुराण के अनुसार, मौर्य वंश ने 134 वर्षों तक शासन किया।
- मौर्य साम्राज्य की स्थापना चंद्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य के मार्गदर्शन में की थी और 323 ईसा पूर्व में वे मगध के सम्राट बने।
- चंद्रगुप्त, उनके पुत्र बिंदुसार और पौत्र अशोक के शासनकाल के दौरान, पूरे उत्तर प्रदेश में शांति और समृद्धि रही।
- उत्तर प्रदेश में अशोक के स्तंभों वाली 5 प्रमुख जगहें मिली हैं, जहाँ प्रमुख एवं लघु स्तंभ शामिल हैं। ये स्तंभ/अभिलेख सारनाथ, इलाहाबाद (प्रयागराज), मेरठ, कौशाम्बी और अहरौरा (मिर्जापुर) में पाए गए हैं।
- अशोक ने सारनाथ में धमेख स्तूप का निर्माण भी करवाया था।
- अंतिम मौर्य शासक बृहद्रथ की हत्या उनके मुख्य सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने की थी।

मौर्योत्तर और विदेशी शक्तियाँ (दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से तीसरी शताब्दी ईसवी)

शुंग वंश (185–73 ईसा पूर्व)

- लगभग 185 ईसा पूर्व में पुष्यमित्र शुंग ने शुंग वंश की स्थापना की।
- उन्होंने अपने शासन की सार्वभौमिकता एवं वैधता स्थापित करने के लिए दो अश्वमेध यज्ञ कराया।
- पतंजलि के महाभाष्य में यवनों (यूनानियों) द्वारा साकेत (अयोध्या) पर कब्जा करने का उल्लेख किया है।
- लगभग 182 ईसा पूर्व में मिलिंद (मिनांडर) एवं उसके भाई ने भारत पर व्यापक आक्रमण किया। इस दौरान मथुरा लंबे समय तक मिनांडर के राज्य का एक प्रमुख नगर बना रहा।
- पुष्यमित्र शुंग एवं उनके पौत्र वसुमित्र ने सिंधु नदी के तट पर यवन आक्रमणकारियों का सामना कर उन्हें पराजित किया।
- पुष्यमित्र शुंग की मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र अग्निमित्र शुंग वंश के शासक बने। वे महाकवि कालिदास के प्रसिद्ध संस्कृत नाटक 'मालविकाग्निमित्रम्' के नायक हैं।
- देवभूति (शुंग वंश के अंतिम शासक) को लगभग 73 ईसा पूर्व में उनके ही मंत्री वासुदेव कण्व ने पराजित कर उनकी हत्या कर दी।

कण्व वंश (73–28 ईसा पूर्व):

- कण्व वंश की स्थापना 73 ईसा पूर्व में वासुदेव कण्व ने की।
- इस वंश ने लगभग 45 वर्षों तक शासन किया।
- लगभग 28 ईसा पूर्व में कण्व वंश के अंतिम शासक सुशर्मा (सुशर्मन) को सातवाहन (आंध्र) वंश के संस्थापक सिमुक ने पराजित कर उनकी हत्या कर दी।

कुषाण वंश (लगभग 100-250 ई.) :

- प्रथम शताब्दी ईस्वी के प्रारम्भ में कुजुल कडफिसेस (कडफिसेस प्रथम) ने कुषाण वंश की स्थापना की।
- कुषाण वंश मध्य एशिया की यूए-ची जनजाति की पाँच शाखाओं में से एक था।
- इस वंश के सर्वाधिक प्रसिद्ध शासक कनिष्क थे। उनके शासनकाल में कुषाण साम्राज्य का विस्तार सबसे अधिक हुआ।
- 60 ईसा पूर्व तक उन्होंने मथुरा में अपने क्षत्रप स्थापित कर दिए थे। ऐसा माना जाता है कि मथुरा कुषाण साम्राज्य का पूर्वी मुख्यालय था।
- उत्तर प्रदेश में कुषाण साम्राज्य का विस्तार वाराणसी, कौशाम्बी एवं श्रावस्ती जैसे प्रमुख नगरों तक था।
- कनिष्क के बाद उनके पुत्र हुविष्क शासक बने।
- वासुदेव द्वितीय संयुक्त कुषाण साम्राज्य के अंतिम शासक थे।
- कुषाण शासकों ने गांधार और मथुरा मूर्तिकला शैलियों को संरक्षण प्रदान किया, जो भगवान बुद्ध एवं बोधिसत्त्वों की प्रारम्भिक प्रतिमाओं के लिए प्रसिद्ध हैं।
- कुषाण शासक भगवान शिव के उपासक थे।

गुप्त वंश

- लगभग 240 ईस्वी में श्री गुप्त ने गुप्त साम्राज्य की स्थापना की थी। हालाँकि, उनके पोते, चंद्रगुप्त प्रथम (319 ईस्वी) को इस राजवंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- इतिहासकार काशी प्रसाद जायसवाल के अनुसार, गुप्त मूलतः उत्तर भारत (वर्तमान उत्तर प्रदेश) के प्रयाग (इलाहाबाद) क्षेत्र के रहने वाले थे। प्रारम्भ में वे स्थानीय सामंत (जागीरदार) के रूप में प्रतिष्ठित हुए और बाद में एक शक्तिशाली राजवंश के रूप में उभरे।

- गुप्त काल (लगभग 320–550 ईस्वी) को भारतीय इतिहास का 'स्वर्ण युग' कहा जाता है।
  - ✓ इस काल में विज्ञान, अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी, कला, साहित्य, तर्कशास्त्र, गणित, खगोल विज्ञान, धर्म तथा दर्शन के क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति हुई, जिससे भारतीय संस्कृति एवं विशेषतः हिंदू संस्कृति का व्यापक विकास हुआ।
- ऐसा माना जाता है कि उत्तर प्रदेश में गुप्त शासक कुषाणों के सामंतीय उत्तराधिकारी थे तथा उन्होंने बिना किसी बड़े कालांतर के कुषाणों का स्थान ग्रहण किया।
- चंद्रगुप्त की विजयों का वर्णन उनके राजकवि हरिषेण द्वारा रचित प्रयाग प्रशस्ति (इलाहाबाद स्तंभ लेख) में मिलता है। इसी अभिलेख में समुद्रगुप्त को पृथ्वी पर अवतरित देवतुल्य शासक के रूप में वर्णित किया गया है।
- स्कंदगुप्त को एकीकृत गुप्त साम्राज्य का अंतिम महान शासक माना जाता है।

<u>गुप्त वंश के प्रमुख शासक एवं उनकी उपलब्धियाँ</u>

शासक	शासनकाल / अवधि	प्रमुख तथ्य / उपलब्धियाँ
श्रीगुप्त	3री शताब्दी ईस्वी	उपाधि: उन्होंने 'महाराज' की उपाधि धारण की। उन्होंने गुप्त वंश के संस्थापक माने जाते हैं।
चंद्रगुप्त प्रथम	319–334 ईस्वी	उपाधि: उन्होंने 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की। उन्होंने लिच्छवि की राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया। उन्होंने गुप्त साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
समुद्रगुप्त	335–380 ईस्वी	प्रयाग प्रशस्ति (इलाहाबाद स्तंभ लेख) में उनकी विजयों का विस्तृत वर्णन मिलता है। आयरिश इतिहासकार एवं भारतीयविद् वी. ए. स्मिथ ने उन्हें 'भारत का नेपोलियन' कहा है।
चंद्रगुप्त द्वितीय	380–412 ईस्वी	उपाधि: उन्होंने 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की। उनके दरबार में नवरत्न (कालिदास, अमरसिंह, धन्वंतरि, वराहमिहिर, वररुचि, घटकर्पर, क्षपणक, वेतालभट्ट एवं शंकु) थे। वे चाँदी के सिक्के जारी करने वाले प्रथम गुप्त शासक थे।
कुमारगुप्त प्रथम	413–455 ईस्वी	इन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की। इन्हें 'शक्रादित्य' ने नाम से भी जाना जाता है। इनके शासनकाल में हूणों ने भारत पर आक्रमण किया।
स्कंदगुप्त	455–467 ईस्वी	वे वैष्णव धर्म के अनुयायी थे। उन्होंने अपने पूर्ववर्तियों की धार्मिक सहिष्णुता के नीतियों का पालन किया।

<u>गुप्तकालीन कला</u>

गुप्त काल भारतीय कला एवं स्थापत्य के इतिहास का स्वर्णिम युग माना जाता है। इस काल में भारतीय कला ने विदेशी प्रभावों से मुक्त एक परिष्कृत, शास्त्रीय एवं मौलिक भारतीय शैली विकसित हुई।

- **दशावतार मंदिर (देवगढ़, ललितपुर)** को भारत के **सबसे प्राचीन सुरक्षित स्वतंत्र हिंदू मंदिरों** में से एक माना जाता है। यह **भगवान विष्णु के दस अवतारों (दशावतार)** को दर्शाने वाले उत्कृष्ट उत्कीर्ण शिल्पफलक के लिए प्रसिद्ध है।
- **भीतरगाँव मंदिर (कानपुर देहात)** का निर्माण **6वीं शताब्दी ईस्वी** में हुआ। इसे भारत का सबसे प्राचीन सुरक्षित ईंट-निर्मित मंदिर माना जाता है। यह अपनी प्रारम्भिक शिखर शैली की स्थापत्य कला के लिए प्रसिद्ध है।
- **बिलसड़ (एटा)** भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI) द्वारा उत्खनित एक महत्वपूर्ण पुरातात्त्विक स्थल है, जहाँ से **5वीं शताब्दी ईस्वी** के **स्तंभ** एवं **कुमारगुप्त प्रथम** से संबंधित अभिलेख प्राप्त हुए हैं।

- **मथुरा कला शैली** क्षेत्र के विशिष्ट **चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर** से निर्मित भगवान बुद्ध एवं हिंदू देवी-देवताओं की उत्कृष्ट प्रतिमाओं के लिए प्रसिद्ध है।
- **सारनाथ कला शैली** भगवान बुद्ध की **सौम्य, आध्यात्मिक एवं भावपूर्ण प्रतिमाओं** के लिए प्रसिद्ध है। इस शैली की सर्वाधिक प्रसिद्ध कृति **धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा में बुद्ध की प्रतिमा** है।
- **धमेख स्तूप (सारनाथ)** का गुप्त काल के दौरान काफी विस्तार हुआ था। यह उस स्थान का प्रतीक है, जहाँ **गौतम बुद्ध ने अपना पहला उपदेश** दिया था।

गुप्तोत्तर काल

हूणों का आक्रमण

- 6ठी शताब्दी ईस्वी के प्रारम्भ में, जब गुप्त साम्राज्य का पतन प्रारम्भ हो रहा था, तब हूणों ने अपने शासक तोरमाण के नेतृत्व में भारत पर बार-बार आक्रमण किए।
  - ✓ हालाँकि, अभी तक इस बात का कोई ठोस प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं कि तोरमाण स्वयं हूण था।
- इन आक्रमणों के दौरान हूणों ने कश्मीर, पंजाब, राजस्थान तथा मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश के कुछ भागों पर अधिकार कर लिया।
- इसके पश्चात् मौखरि वंश ने कन्नौज के आसपास के पश्चिमी उत्तर प्रदेश पर अपना अधिकार स्थापित किया।
- कन्नौज के मौखरि शासक ने हूणों को पराजित कर उत्तर भारत को उनके प्रभुत्व से मुक्त कराया।

नोट: मौखरि वंश की मुख्य कन्नौज शाखा के संस्थापक हरि वर्मन थे। हालाँकि, ईशान वर्मन को वास्तविक स्वतंत्र संस्थापक माना जाता है, जिन्होंने विदेशी अधीनता से मुक्त होकर लगभग 550–554 ईस्वी में एक पूर्णतः संप्रभु साम्राज्य की स्थापना की थी।

वर्धन/पुष्यभूति वंश

- दरबारी कवि बाणभट्ट द्वारा लिखी गई प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रंथ 'हर्षचरित' के अनुसार, पुष्यभूति ने 6ठी शताब्दी ईस्वी के प्रारम्भ में इस वंश की स्थापना की।
- उन्होंने अपनी प्रारम्भिक राजधानी स्थानेश्वर या स्थाण्वीश्वर (वर्तमान थानेसर, हरियाणा) में स्थापित की।
- प्रभाकरवर्धन के पुत्र हर्षवर्धन ने 606 ईस्वी में मात्र 16 वर्ष की आयु में स्थानेश्वर के शासक बने।
- गौड़ नरेश शशांक ने हर्षवर्धन के ज्येष्ठ भ्राता राज्यवर्धन की हत्या कर दी।
- हर्षवर्धन के राज्यारोहण के पश्चात् स्थानेश्वर एवं कन्नौज का एकीकरण हुआ, जिससे कन्नौज उत्तर भारत का प्रमुख नगर बन गया और आगामी कई शताब्दियों तक उसकी प्रतिष्ठा पाटलिपुत्र के समकक्ष रही।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने हर्षवर्धन के शासनकाल में भारत की यात्रा की तथा उनके शासन की अत्यंत प्रशंसा की।
- 647 ईस्वी में हर्षवर्धन की मृत्यु के साथ ही वर्धन वंश का अंत हो गया।
- 8वीं शताब्दी ईस्वी के प्रारम्भ में **यशोवर्मन** ने कन्नौज पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया।
  - ✓ उनका प्रभाव लगभग संपूर्ण भारत तक विस्तृत था तथा उनके शासनकाल में कन्नौज ने पुनः अपना प्राचीन वैभव एवं गौरव प्राप्त किया।
  - ✓ उन्होंने **ललितादित्य मुक्तापीड** के सहयोग से भारत को अरब आक्रमणों से सुरक्षित रखा।
- कन्नौज पर प्रभुत्व स्थापित करने के लिए बंगाल के पाल वंश, दक्षिण के राष्ट्रकूट वंश तथा गुर्जर-प्रतिहार वंश के मध्य दीर्घकालीन संघर्ष हुआ, जिसे इतिहास में त्रिपक्षीय संघर्ष के नाम से जाना जाता है।

मध्यकालीन इतिहास

प्रारंभिक मध्यकालीन अवधि

कन्नौज पर प्रभुत्व हेतु त्रिपक्षीय संघर्ष

- कन्नौज पर प्रभुत्व स्थापित करने के लिए 8वीं से 10वीं शताब्दी ईस्वी के मध्य गुर्जर-प्रतिहार (पश्चिमी एवं उत्तरी भारत), पाल वंश (बंगाल एवं बिहार) तथा राष्ट्रकूट वंश (दक्कन) के बीच दीर्घकालीन संघर्ष हुआ, जिसे इतिहास में 'त्रिपक्षीय संघर्ष' के नाम से जाना जाता है।
  - ✓ कन्नौज राजनीतिक प्रभुत्व एवं आर्थिक समृद्धि का प्रमुख प्रतीक था, क्योंकि इस पर नियंत्रण का अर्थ उपजाऊ मध्य गंगा के मैदान तथा महत्त्वपूर्ण व्यापारिक मार्गों पर अधिकार स्थापित करना था।
- त्रिपक्षीय संघर्ष लगभग 790 ई. में इस समय शुरू हुआ, जब **गुर्जर-प्रतिहार शासक राजा वत्सराज ने पाल राजवंश के** शासक धर्मपाल पर आक्रमण किया और **राष्ट्रकूट राजा ध्रुव धारावर्ष** के अचानक हस्तक्षेप ने इसे "त्रिपक्षीय" संघर्ष में परिवर्तित कर दिया।
- **गुर्जर-प्रतिहार:** त्रिपक्षीय संघर्ष के अंत में गुर्जर-प्रतिहार विजयी हुए। नागभट्ट द्वितीय एवं मिहिर भोज जैसे शक्तिशाली शासकों के नेतृत्व में उन्होंने कई शताब्दियों तक कन्नौज पर अपना प्रभुत्व बनाए रखा।

गुर्जर-प्रतिहार

- गुर्जर-प्रतिहार वंश के मूल संस्थापक हरिचंद्र (6ठी सदी ई.) थे, जबकि नागभट्ट प्रथम (लगभग 730-756 ई.) को इसके साम्राज्यवादी चरण का संस्थापक माना जाता है।
- **राजधानी:** इसकी राजधानी प्रारम्भ में माण्डव्यपुर (वर्तमान राजस्थान) तथा बाद में अवंति (वर्तमान मध्य प्रदेश) रही।
- नागभट्ट प्रथम (730–756 ईस्वी) ने गुर्जर-प्रतिहार साम्राज्य की स्थापना की तथा उन्हें अरब आक्रमणकारियों को पराजित करने के लिए प्रसिद्ध है।
- नागभट्ट द्वितीय ने सिंधु–गंगा के मैदानी क्षेत्रों में व्यापक विजय अभियान चलाया तथा पाल वंश के संरक्षण में चक्रायुध से कन्नौज पर अधिकार कर लिया। राष्ट्रकूटों की शक्ति क्षीण होने के पश्चात् वे उत्तर भारत के सर्वाधिक शक्तिशाली शासक बने और कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया।
- मिहिर भोज (836–885 ईस्वी) ने अपने साम्राज्य का विस्तार उत्तर में कश्मीर से दक्षिण में नर्मदा नदी तक तथा पश्चिम में काठियावाड़ से पूर्व में बिहार तक किया।
- महेन्द्रपाल प्रथम साहित्य के महान संरक्षक थे। उनके दरबार में प्रसिद्ध संस्कृत कवि राजशेखर को विशेष संरक्षण प्राप्त था।
- राज्यपाल गुर्जर-प्रतिहार वंश के अंतिम प्रभावशाली शासक थे। 1018 ईस्वी में महमूद ग़ज़नी ने उन्हें कन्नौज से पराजित कर निष्कासित कर दिया तथा बाद में चंदेल शासक विद्याधर की सेना ने उनकी हत्या कर दी।
- इसके उपरान्त इलाहाबाद क्षेत्र में प्रतिहारों का एक छोटा-सा राज्य संभवतः एक पीढ़ी तक बना रहा।

उत्तर प्रदेश का उत्तर-मध्यकालीन इतिहास

12वीं शताब्दी में मुहम्मद ग़ोरी के आक्रमणों के साथ उत्तर प्रदेश में मुस्लिम शासन का सूत्रपात हुआ। दिल्ली सल्तनत की स्थापना ने इस क्षेत्र के राजनीतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य में व्यापक बदलाव आया।

दिल्ली सल्तनत

दिल्ली सल्तनत ने 300 से अधिक वर्षों (1206–1526) तक भारतीय उपमहाद्वीप के बड़े भू-भाग पर शासन किया। सल्तनत काल के दौरान इस संपूर्ण काल में दिल्ली की सत्ता पर क्रमशः पाँच वंशों का शासन रहा:

- **मामलुक (गुलाम) वंश (1206–1290) की स्थापना** कुतुबुद्दीन ऐबक ने की थी।
- **खिलजी वंश (1290–1320)** की स्थापना जलालुद्दीन खिलजी ने की थी।
- **तुगलक वंश (1320–1414)** की स्थापना गयासुद्दीन तुगलक ने की थी।
- **सैय्यद वंश (1414–1451)** की स्थापना खिज़्र खाँ ने की थी।
- **लोदी वंश (1451–1526)** की स्थापना बहलोल खाँ लोदी ने की थी।

मुगल साम्राज्य

मुगल काल (16वीं-18वीं सदी) उत्तर प्रदेश के इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण दौर में से एक था। 1526 में पानीपत की पहली लड़ाई में बाबर की जीत ने भारत में मुगल शासन की नींव रखी, जिसमें उत्तर प्रदेश सत्ता का मुख्य केंद्र था।

- **बाबर (1526–1530):** मुगल वंश का संस्थापक था। उसने 1526 ईस्वी में प्रथम पानीपत के युद्ध में इब्राहिम लोदी को पराजित कर भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना की।
- **हुमायूँ (1530–1540 और 1555–1556):** उसने दिल्ली के छठे नगर 'दीनपनाह' की स्थापना की। उसके शासनकाल में चौसा का युद्ध (1539 ई.) तथा कन्नौज/बिलग्राम का युद्ध (1540 ई.) अर्थात दो युद्ध लड़ी गई।
- **अकबर (1556–1605):** इसे प्रायः मुगल वंश का सर्वश्रेष्ठ शासक माना जाता है। उसने मनसबदारी व्यवस्था लागू की, जो सैन्य एवं नागरिक प्रशासन के लिए एक केंद्रीकृत पदानुक्रम थी।
- **जहांगीर (1605–1627) और शाहजहाँ (1628–1658):** इनके शासनकाल को मुगल कला, स्थापत्य एवं सांस्कृतिक उत्कर्ष का स्वर्णिम काल माना जाता है।
- **औरंगजेब (1658–1707):** उसके शासनकाल में मुगल साम्राज्य अपने सर्वाधिक क्षेत्रीय विस्तार पर पहुँचा और लगभग संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप पर उसका प्रभुत्व स्थापित हो गया।
- मुगल वंश के अंतिम सम्राट बहादुर शाह द्वितीय (बहादुर शाह ज़फ़र) को 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका के कारण ब्रिटिश सरकार ने रंगून (वर्तमान यांगून, म्यांमार) निर्वासित कर दिया।

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण तथ्य

आगरा

- 1504 ई. में सिकंदर लोदी ने आगरा की स्थापना की थी।
- सिकंदर लोदी के बाद इब्राहिम लोदी आगरा की गद्दी पर बैठा, किन्तु **1526 ई. में पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर** ने उसे पराजित कर भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना की।
- मुगल काल में आगरा शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र था, जबकि इसके आसपास का क्षेत्र नील की खेती के लिए प्रसिद्ध था।
- **आगरा के प्रमुख स्थापत्य स्मारकों:** आगरा किला, एतमादुद्दौला का मकबरा, अकबर का मकबरा, ताजमहल, दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, और आगरा की मोती मस्जिद आदि।

कालपी (जालौन जनपद)

- 12वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में कुतुबुद्दीन ऐबक ने कालपी पर अधिकार कर उसे दिल्ली सल्तनत में सम्मिलित कर लिया।
- बादशाह अकबर के नवरत्नों में से बीरबल एवं राजा टोडरमल उत्तर प्रदेश के निवासी थे।
- कालपी में बीरबल का रंगमहल तथा मुगलकालीन टकसाल (मुद्रा निर्माण केंद्र) हैं।

जौनपुर

- सुल्तान फ़िरोज़ शाह तुग़लक़ ने 1359 ई. में जौनपुर शहर की स्थापना की।
- जौनपुर स्वतंत्र शर्की सल्तनत की राजधानी के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

➢ कला, इस्लामी शिक्षा एवं विशिष्ट स्थापत्य के उत्कर्ष के कारण जौनपुर को **'शिराज-ए-हिंद'** कहा जाता है। बाद में यह लोदी वंश के अधीन आ गया तथा मुगल काल में एक महत्वपूर्ण प्रांतीय प्रशासनिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ।
➢ शर्की वंश के प्रमुख स्थापत्य स्मारकों में अटाला मस्जिद, जामा मस्जिद (बड़ी मस्जिद) एवं लाल दरवाज़ा मस्जिद प्रमुख हैं।
 ✓ जौनपुर की अटाला मस्जिद तथा जौनपुरी मस्जिद का निर्माण इब्राहिम शाह शर्की ने कराया था।
 ✓ बदायूँ की जामा मस्जिद का निर्माण इल्तुतमिश ने कराया था।

नोट:
➢ शर्की **वंश (1394–1479) की** स्थापना मलिक सरवर ने की थी।
➢ इस वंश को दिल्ली के **लोदी वंश** ने अपने अधीन कर लिया था।

झांसी

➢ शहर की असली पहचान 1613 में बनी, जब ओरछा के राजा बीर सिंह देव ने बंगिरा पहाड़ी पर विशाल झांसी किले का निर्माण करवाया।
➢ **झांसी की मुख्य इमारतें:** लक्ष्मीबाई का महल, महादेव मंदिर और मेहंदी बाग।

लखनऊ

➢ आधुनिक लखनऊ को एक शानदार राजधानी शहर के रूप में बसाने का श्रेय नवाब आसफ़-उद-दौला (आसफउद्दौला) को जाता है।
➢ आसफउद्दौला ने मुहर्रम मनाने के लिए 1784 ई. में लखनऊ में इमामबाड़ा का न इरमान करवाया था।
➢ लखनऊ के अंतिम नवाब वाजिद अली शाह थे, जिन्हें 1856 ई. में में लॉर्ड डलहौज़ी ने पदच्युत कर लखनऊ पर ब्रिटिश अधिकार स्थापित कर लिया।
➢ मुगल काल के दौरान, लखनऊ मदरसा 'मुस्लिम न्यायशास्त्र' का प्रमुख केंद्र था।

अवध

➢ 1722 ईस्वी में सआदत खाँ बुरहान-उल-मुल्क (सआदत अली खाँ प्रथम) ने स्वायत्त (स्वतंत्र) अवध राज्य की स्थापना की थी।
➢ शुजाउद्दौला के मृत्यु के पश्चात् 1775 ईस्वी में आसफ़-उद-दौला अवध के नवाब बने।
➢ आसफ़-उद-दौला ने 1775 ईस्वी की फैज़ाबाद संधि के द्वारा बनारस के क्षेत्र को अंग्रेज़ों को सौंप दिया।

इलाहाबाद

➢ 'इलाहाबाद की संधि' पर 1765 में अंग्रेजों और मुगल शासक शाह आलम द्वितीय ने हस्ताक्षर किए थे।

दिल्ली

➢ **बाबर,** तैमूर (पितृ पक्ष) और चंगेज़ ख़ान (मातृ पक्ष) के वंशज बाबर ने भारत पर आक्रमण किया। उसने **1526 में पानीपत के प्रथम युद्ध में इब्राहिम लोदी को पराजित करके मुगल साम्राज्य की स्थापना की।**
➢ शाहजहाँ ने मुगल राजधानी को आगरा से दिल्ली स्थानांतरित कर दिया।
➢ इस्लाम शाह सूरी की मृत्यु के पश्चात् उत्पन्न राजनीतिक परिस्थितियों के कारण हेमू (हेमचंद्र विक्रमादित्य) को दिल्ली पर शासन करने का अवसर प्राप्त हुआ।

Unleash the topper in you